कनेक्ट विद नेचर

राहुल कुमार साक्षी

Sample Copy. Not For Distribution.

कनेक्ट विद् नेचर

Sample Copy. Not For Distribution.

Publishing-in-support-of,

EDUCREATION PUBLISHING

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.educreation.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-1-61813-585-8

Price: ₹ 225.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Educreation.

Printed in India

Sample Copy. Not For Distribution.

कनेक्ट विद् नेचर

राहुल कुमार साक्षी

EDUCREATION PUBLISHING
(Since 2011)
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

Sample Copy. Not For Distribution.

समर्पण

यह किताब मैं अपने गुरू तथा माता व पिता के चरणों में समर्पित करता हूँ। जिनके प्रेम, स्नेह तथा ज्ञान रूपी प्रकाश ने मेरा हमेशा पथ प्रदर्षित किया।

Sample Copy. Not For Distribution.

आभार

मैं ईश्वर, प्रकृति तथा प्रत्येक जीव जन्तु के प्रति आभारी हूँ। जिन्होने मुझे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से अपना सहयोग दिया, तथा मुझे इस काबिल बनाया कि मैं इस प्रकृति के सबसे गुढ़तम रहस्य को दुनिया के सामने रख पा रहा हूँ। जिसके आधार पे अगर मनुष्य चाहे तो समय के शिला पर अपने नाम को सुनहरे अक्षरों में लिख सकता है।

मैं आभारी हूँ; अपनी दीदी (सीमा) तथा जीजा (विनोद कुमार) के प्रति ,जिन्होने मुझे मेरे मां व पिता के समान स्नेह तथा प्यार दिया। तथा जीवन के कड़ी धूप में उन्होनें बादलों की तरह हमारे ऊपर हमेशा अपना आशीर्वाद रखा।

मैं आभारी हूँ; अपनी बहन प्रियंका तथा रानी के प्रति, जिसके साथ स्नेह तथा दोस्ती का ऐसा तालमेल रहा कि, मैने अपने टूटते हॉसलों को भी सम्भाल लिया।

मैं आभारी हूँ; अपने दोस्त प्रीति के प्रति, जिसकी आत्मीय खुबसुरती के रंगों ने मेरे जीवन को इन्द्रधनुष के रंग में रंग दिया।

Sample Copy. Not For Distribution.

मैं आभारी हूँ, अपने मित्रों के प्रति जिनकी बातों ने मुझे हमेशा प्रेरित किया। ताकि मैं समय के साथ सफलता के उड़ान भर सकूँ।

धन्यवाद!!!!!!!

Sample Copy. Not For Distribution.

किताब के बारे में

मैं कुछ कहने से पहले सभी पाठकों से नम्र निवेदन करूंगा; कि वो मेरे व्याकरण तथा मात्राओं के गलतियों को क्षमा करते हुए, मुझे सही परामर्ष दें। ताकि आने वाले नये किताबों में मैं उन गलतियों को सुधार कर एक बेहतर रचना दे सकूँ।

कनेक्ट विद् नेच्र महज एक किताब नही है। यह प्रकृति के उस रहस्य को समेटे हुए है, जिसके प्रभाव से हीं पूर्ण प्रकृति अपना संचलान करती है। तथा उन सभी विचारधारकों के विचारों का सार है, जो विभिन्न स्तर पर प्रकृति से जुड़ने की बात कहा करते हैं।

यह किताब प्रकृति ,जीवन ऊर्जा तथा जीवन के संबंध को पूर्ण रूप से उजागर करती है। तथा आम अवधारणाओं के बीच क्रान्तिकारी विचार को पैदा करना चाहती है। ताकि मनुष्य जाती इस गुढ़तम रहस्य को समझ कर अपने जीवन को सफल बना सके।

अगर मनुष्य; प्रकृति तथा जीवन उर्जा (विश्वशक्ति) को समझ ले तब वह अपने किसी भी कल्पनाओं को पंख दे सकता है, अर्थात वह अपने विचारो को आसानी से साकार कर सकता है। मगर उसे विश्वशक्ति के साथ निरन्तर जुड़ कर रहना होगा। क्योंकि विश्व शक्ति ही मनुष्य तथा

Sample Copy. Not For Distribution.

जीव को प्रकृति से बांध कर रखती है। जिससे प्रकृति हमारा निरन्तर सृजन करती है।

इसलिए इस किताब में विभिन्न माध्यमों को जानेगें, जिसके आधार पर हम निरन्तर प्रकृति के साथ जुड कर अपना साकारात्मक सृजन कर सकते हैं।

तो आइए हम इन शब्दों के साथ सत्य की नई दुनिया में दाखिल होते हैं।

Sample Copy. Not For Distribution.

Sample Copy. Not For Distribution.

1

कनेक्ट विद् नेचर

हम पूरी सृष्टि में बहुत छोटे से कण के बराबर हैं। और हम सब कि एक ही खोज है, अच्छा स्वास्थ्य सुख, समृद्धि, ज्ञान, सौभाग्य अर्थात हर हाल में सुख और शांति की कामना।

जिसे हम पाने के लिए कड़ी से कड़ी मेहनत करते हैं। तथा जैसे जैसे हमारी मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक विकास होने लगता है, वैसे हीं हम अपने मन रूपी घोड़े पर बैठ कर सुख और समृद्धि के पीछे दौड़ने लगते हैं। चाहे रास्ता और

Sample Copy. Not For Distribution.

तरीका कैसा भी हो ,हम लगातार उसके पीछे जीवन भर दौड़ते हैं।

लेकिन क्या हमें ये सारी चीजें मिल पाती हैं? इस सवाल का जबाव हमें खुद चेतना के गहरे तल पे उतर कर जानना होगा, कि आखिर सुख, सौभाग्य और शांति के गहरे तलाश के बावजूद हम जिन्दगी भर भटकते रहते हैं। और अंततः जीवन के मूल लक्ष्य से चूक जाते हैं।

हमारे जीवन का मूल लक्ष्य है, अपने अस्तित्व से जुड़ना अर्थात अपने भीतर की छिपी हुई अनंत शक्तियों के साथ एक होना। जब ऐसा होता है; तब हम इसे आनंद की स्थिति कहते हैं, और यह आनंद अपने साथ दो दोस्त सत्य और चित को लेकर आता है।

सत्य अर्थात पूर्ण सत्यता और चित का अर्थ है, पूर्ण जार्गिती अर्थात अखण्ड चेतना। जब हम स्वयं से जुड़ने लगते हैं; तो सुख, सौभाग्य ,शांति और ज्ञान की बारिश स्वत; हमारे उपर होने लगती हैं। जिससे हम असीम आंनद के समुद्र के मालिक हो जाते है, और सुख और समृद्धि हमारे पीछे भागने लगती है।

लेकिन मूल रूप से हमें कुछ सैद्धान्तिक बातों को तथा विश्वशक्ति (प्राण शक्ति), प्रकृति और

Sample Copy. Not For Distribution.

स्वयं को जानना होगा, ताकि हम जिन्दगी में पूर्ण सफलता पा सकें।

जब हम प्रकृति के नजदीक होते हैं, और उससे जुडना़ चाहते हैं, तो हमारा तालमेल प्रकृति से गहरा हो जाता हैं। जिससे हम प्रकृति में मौजूद प्राण शक्ति से जुड़ने लगते हैं और हमारा मानसिक, शारिरिक तथा वैचारिक विकास होने लगता है।

आइये यहाँ हम जानने कि कोशिश करते हैं, कि विश्व शक्ति (प्राण शक्ति) क्या है?

(विश्वशक्ति जीवन ऊर्जा)

विश्वशक्ति अथवा जीवन ऊर्जा, इन्हे विभिन्न देशो मे कई नामो से जाना जाता है। जैसे चीन में (ची) और जापान में (की) से तथा भारत में भी इसे प्राण ऊर्जा, विश्व शक्ति एवं जीवन ऊर्जा की संज्ञा दी जाती है।

विश्वशक्ति पूरे विश्व और प्रकृति को व्यवस्थित रखती है। यह शक्ति प्रत्येक ग्रह, नक्षत्र, अणु, परमाणु, जीव, जन्तु, नदी, समुद्र, हवा, बीज, पेड़ सब को बांधे़ हुए है; तथा यह पूरे विश्व को संतुलित रखती है।

विश्वशक्ति हर क्रिया और कार्य की नींव है। यहीं वो उर्जा है, जो प्रत्येक बीज को जीवन देती

Sample Copy. Not For Distribution.

है, तथा जीव एवं प्रकृति के बीच निरन्तर संतुलन को बनाए रखती है।

विश्वशक्ति जीवन का आधार है। यही वो शक्ति है, जो तितली को रंग–बिरंगे पंख के साथ एक खुबसूरत उड़ान देती है।

विश्वशक्ति हवा में ऑक्सीजन की तरह मौजूद है। जिसे नंगी आंखो से नहीं देखा जा सकता पर इसकी मौजूदगी से ही प्रकृति का सृजन और विनाश होता है।

जब हम स्वयं से जुड़ के रहते हैं, तब हम मूलतः प्रकृति से जुड़ जाते हैं। तब प्रकृति में बह रही प्राण उर्जा हमारे भीतर प्रवेश करने लगती है। जिससे स्वतः हमारे भीतर पल रहे शारीरिक तथा मानसिक बिमारियाँ ठीक होने लगती है।

इसलिए दुनिया के कई देशों में आज भी विभिन्न बिमारियों का इलाज **नैचुरोपैथी** द्वारा किया जाता है। क्योंकि प्रकृति से बहुत बड़ी मात्रा में हमें प्राण ऊर्जा मिलती है। जो बिमारियों को कपड़े पर लगे दाग कि तरह धो देती है। इसलिए **नैचुरोपैथी** में इलाज के दौरान यह कोशिश कि जाती है, कि मरीज को पूरी तरह हरे–भरे पेड़–पौधों के बीच रखा जाए तथा खाने में भी उसे अत्यधिक प्राण उर्जा वाला खाना खिलाया जाए, जिससे मरीज आसानी से प्रकृति से जुड़ कर अपनी बिमारियों का इलाज कर सके।

इसी तरह यदि हम आयुर्वेद की उपचार पद्धति को जानने की कोशिश करेंगे, तो आयुर्वेदाचार्य

Sample Copy. Not For Distribution.

किसी भी बिमारी का ईलाज प्रकृति मे मौजूद जडी–बूटियों द्वारा करते हैं। जिससे जड़ी – बूटियों की प्राण शक्ति तथा तत्व मनुष्य के शरीर में चली जाती है, और धीरे – धीरे बिमारियां दूर होने लगती है।

यदि हम प्राचीन भारत की ओर मुड़ कर देखे तो जो भी संत, ऋषि ,महर्षि एवं आयुर्वेदाचार्य थे उनका निवास स्थल अक्सर नदी, जगंल अथवा पहाड़ों के बीच प्रकृति की गोद में हुआ करता था। जिससे वे वनस्पति के बीच में रह कर पेड़, नदियों और पहाड़ों से टकराते प्राण युक्त हवाओं में सांस लिया करते थे। तथा वे प्रकृति के बीच रहने के महत्व से परिचित थे, और विश्व शक्ति के खेल को जानते थे। वे जानते थे कि प्राण शक्ति ही जीवन का आधार है, तथा प्राण शक्ति के बिना जीवन संभव नही।

इसलिए मेडिकल साईंस के अविष्कार ना होते हुए भी, उनकी आयु पूर्ण होती थी। क्योंकि वे प्रकृति से जुड़ कर रहते थे।

जब हम प्रकृति के बीच मे रहते हैं, तो हमारे उपर विश्वशक्ति की वर्षा होने लगती है, और हम शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ्य होने लगते हैं।

विश्वशक्ति केवल हमें शारिरिक तथा मानसिक रूप से ही स्वस्थ्य नहीं करती, बल्कि यही वो शक्ति है, जो प्रकृति से जोड़ती है। तथा हमारी चेतना को अध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाती है

Sample Copy. Not For Distribution.

,और हमे वर्तमान को पूर्ण रूप से समझने की दृष्टि प्रदान करती है। तथा हमारे ज्ञान और बुद्धि को अगले चरण तक ले जाती है।

यही वो ईश्वरीय शक्ति है, जो पूर्ण सृष्टि का संचालन करती है। जो छोटे से बीज से संपूर्ण वृक्ष को तथा एक अण्डे में से पूर्ण पक्षी को जन्म देती है।

ये सारी चीजें मनुष्य के बस में नहीं है। यह तो विश्वशक्ति जो इश्वरीय शक्ति है उसी का खेल है। इसकी सीमा विज्ञान से भी परे है। जिसे हम विज्ञान के तराजू पर रख कर तौल नहीं सकते।

उसी प्रकार यदी हम भारतीय दर्शन अथवा सिंधु घाटी की सभ्यता की ओर मुड़ के देखे; तो हमें यह पता चलता है, कि प्राचीन समय में भी लोग प्रकृति के महत्व से परिचित थे। और प्रकृति से बह रहे निरन्तर जीवन उर्जा से जुड़े रहते थे।

इसलिए मेडिकल साइन्स के कमी के बावजूद लोगों की उम्र पूर्ण हुआ करती थी। क्योंकि प्रकृति से बह रही विश्वशक्ति उनकी बिमारियों को साफ कर दिया करती थी, अर्थात उनकी बिमारिया स्वतः ठीक हो जाती थी। जिससे विज्ञान और उसके अविष्कार के कमी होने के बावजूद वे शांत, सुखी और व्यवस्थित ढंग से जिन्दगी जीते थे।

यदि हम हडप्पा सभ्यता के इतिहास को जानेगे तो पता चलता है, कि उस काल के लोग भी प्रकृति कि पूजा किया करते थे, अर्थात प्रकृति

Sample Copy. Not For Distribution.

को ही ईश्वर का प्रतिक माना करते थे। उनका मानना था; कि ईश्वर खुद को प्रकृति के रूप में व्यक्त करता है। तथा ईश्वरीय आशीर्वाद प्रकृति से बहते हुए हमारे भीतर प्रविष्ट करती है। इसलिए वे अपने दर्शन और सिद्धांत की वजह से प्रकृति के बीच में रहा करते थें, जिनसे उनकी सभ्यता का विकास कई चरण तक आगे बढ़ा।

जब हम प्रकृति से बंध जाते हैं, तो वह माँ के समान हमारा देख भाल करती है। वह अपने जीवन उर्जा से हमें बांधे रहती है, और हमारा भरण–पोषण करती है। तथा हमारी मानसिक शारीरिक तथा अध्यात्मिक सृजन भी करती है।

इसलिए अगर हमें इस धरती पर निवास करना है, तो हमें प्रकृति और उससे बह रहे जीवन शक्ति से जुड़ कर रहना होगा।

वास्तव में प्रकृति से जुड़ना स्वंय से जुड़ने के बराबर है। क्योंकि प्रकृति जीवन के माध्यम से स्वंय को महसूस करती है। वह खुद को समेट कर जीवन के रूप में रूपान्तरित करती है, यही एक मात्र सत्य और अटल सिद्धांत है।

इसलिए यदि हम जाग कर सारी बातों को समझने की ओर अगर एक कदम भी बढाएँगे, तो हमें सारी बातें और उसके पीछे छिपी हुई वजह भी समझ में आने लगेगी। क्योंकि जब हमारी चेतना बढ़ती है, तो हम हर बात को नये ढंग से और गहराई से समझते हैं, तथा सत्य के साथ आगे बढ़ते हैं।

Sample Copy. Not For Distribution.

जैसे–जैसे हम प्रकृति और उससे निरन्तर बह रहे विश्वशक्ति अर्थात जीवन–उर्जा से टूटने लगते हैं, वैसे ही हम लोग विभिन्न तरह के शारीरिक ,मानसिक तथा सामाजिक परेशानियाँ में उलझने लगते हैं। क्योंकि हम परिस्थितियों को पूर्ण रूप से समझ नहीं पातें और हवा में हीं खुद के लिए फांसी का फंदा बांधने लग जाते हैं, और जीते जी अपने जीवन को नर्क की आग में झोंक देते हैं, और सत्य और अच्छाई होते हुए भी हम अपराध का रास्ता चुन लेते हैं।

प्रकृति का मूल सिद्धांत है, कि जब तक हम प्रकृति से जुड़े होते हैं; तो वह हमारी मानसिक, शारीरिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक सृजन करती हैं। और उसकी जीवन उर्जा से टूटते हीं प्रकृति हमें नष्ट करने लगती है।

इसलिए, यदि हम जीवन को समझना चाहते हैं; और चाहतें हैं, कि हम तरक्की के रास्ते पर आगे बढ़े। तो हमें विश्वशक्ति और उसके खेल को समझना होगा तथा यह जानना होगा; आखिर क्यों दो सामान्य पालन–पोषण किया गया लड़का एक जज की कुर्सी पर बैठकर न्याय देता हैं, और दूसरा लड़का अपराध की कालिक से अपने हाथों को रंगे रहता है।

उसी प्रकार एक व्यक्ति लगातार तरक्की की सीढीयाँ चढ़ आसमान को छूने वाला होता है, तो दूसरा व्यक्ति खुद के उलझे विचारों और कार्या की वजह से पाताल में सीढ़ी लगा लेता है।

Sample Copy. Not For Distribution.

सच्चाई यह है, कि यह सारा खेल विश्वशक्ति का है। क्योंकि जब हम अपने अस्तित्व से जुड़े होते हैं, तो विश्वशक्ति हमारे सृजन का आधार होती है। वह हमारी जरूरतों और सकारात्मक संदेश को प्रकृति तक ले जाती है, और प्रकृति हमारी बातों को सुनकर उसे पूरी करती है। जिससे हम लगातार सृजन की अवस्था में बने रहते हैं।

आईए, हम मिलकर यहाँ कुछ उल्लेखनीय विषयों पर विचार करते हैं। जब हम अपने आस–पास के माहौल से सामान्जस्य बिठाने लगते हैं; तो हर परिस्थितियों को बेहतर ढंग से समझते और उन परिस्थितियों मे हम अपनी बुद्धि और विवेक के आधार पर काम करते हैं।

जैसे ,कि हमे किसी पार्क में गुलाब के फूल को देखते हीं फूल तोड़ लेने का मन करता है। यदि हम उसे बिना वजह के तोड़ लेते हैं; तो वह गुलाब अपने आधार से टूट जाता है। और समय से पहले मुरझाकर गिर जाता है।

अर्थात जो उस गुलाब मूल का प्रकृति था अथवा जीतने दिन का उसका अवधी था। जिस खुशबू और खूबसूरती को फैलाने के लिए वह गुलाब बीज से छोटी सी कली फिर फूल बना। लेकिन यदि बिना कुछ समझे उस फूल को बेवजह तोड़ लेते हैं, तब एक नकारात्मक उर्जा पैदा होती है।

Sample Copy. Not For Distribution.

क्योंकि जब मनुष्य की विचारधारा उसके आस–पास की प्रकृति से उसे अलग करती हो, तो वह खुद से नकारात्मक उर्जा पैदा करने लगता है। यही उर्जा विभिन्न परेशानियों और उलझनों का रास्ता होता है, जिसे मनुष्य खुद तैयार करता है। इसी प्रकार यदि हम उस फूल को नहीं तोड़ते; और उसके खूबसूरती और सुंगध से जुड़ने की कोशिश करते हैं, तब हम अपने आप ही उस फूल और पेड़ की जीवन उर्जा से जुड़ जाते हैं। और उसकी प्रवाहित होती उर्जा हमारे शरीर और मन में पल रहे बीमारियों को साफ करने लगती है।

हम यहाँ पर देख सकते हैं; कि जब हम होश में रहकर हर परिस्थितियों के बीच सामान्जस्य स्थापित करते हैं। तो हर बात को पूरी तरह से समझते हूए हम प्रकृति के साथ ज्यादा छेड़–छाड़ नहीं करते। क्योंकि प्रकृति हीं हमारे अस्तित्व को बनाये रखती हैं, वह हमारे शरीर के प्रत्येक कोशिकाओं को विकसित भी करती हैं और उसे नष्ट भी।

इस तरह प्रकृति अपना निर्धारण स्वतः ही कर लेती हैं, और समय–समय पर खुद के संतुलन को बनाये रखने के लिए खुद में परिवर्तन भी लाती है।

यदि हम उस गुलाब के फूल को साक्षी बनकर देखते हैं; तो पहले पेड़ के तने में एक छोटी सी कली फूटती है, फिर धीरे–धीरे उसकी पंखुडियों का विस्तार होता है, और वह रंग तथा सुगंध

Sample Copy. Not For Distribution.

Get Complete Book
At Educreation Store
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

कनेक्ट विद् नेचर

कनेक्ट विद् नेच्र महज एक किताब नही है। यह प्रकृति के उस रहस्य को समेटे हुए है, जिसके प्रभाव से हीं पूर्ण प्रकृति अपना संचलान करती है। तथा उन सभी विचारधारकों के विचारों का सार है, जो विभिन्न स्तर पर प्रकृति से जुड़ने की बात कहा करते हैं।

यह किताब प्रकृति, जीवन ऊर्जा तथा जीवन के संबंध को पूर्ण रूप से उजागर करती है। तथा आम अवधारणाओं के बीच क्रान्तिकारी विचार को पैदा करना चाहती है। ताकि मनुष्य जाती इस गुढ़तम रहस्य को समझ कर अपने जीवन को सफल बना सके।

लेखक से संपर्क हेतु :
✉ rahulkumarranchi58@gmail.com

EDUCREATION
PUBLISHING (Delhi)
www.educreation.in

Also available as an eBook
NON-FICTION
ISBN 978-1-61813-585-8
9 781618 135858 >